Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

वेद विद्या सबके लिए है

अत्रि दुष्यन्त रविन्द्रभाई
शोधछात्र
श्री सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी – राजकोट

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

वेद विश्वके सबसे प्राचीन एवं विकसित सभ्यताके परिचायक हैं। चारों वेद सभी विद्याओंके जनक हैं। पृथ्वीपर प्राणी मात्रके कल्याणके लिए परमेश्वरने वेदोंका ज्ञान ऋषियोंके मानस पटलपर प्रकाशित किया हैं। वेद विभिन्न विधियों कला और राजनीति सामाजिक विचार एवं राष्ट्रकी भावनाका समूह है।

वेदोंको व्याख्यामें व्यक्त करना है, तो विभिन्न सृष्टि उपयोगी विद्याओंके समूहको हम वेद संज्ञा दे सकते हैं। सभी विद्याओंका उपयोग मनुष्य मात्र करता है। वैदिक ज्ञानपर किसीका भी एकाधिकार नहीं है। वह तो सबके लिए है। परमात्माने सभी मनुष्यको सभी अंग उपांगोके साथ विचार करनेकी भी विशिष्ट शक्ति दी है। यहां पर किसी भी आचार्य या विचारधाराका विरोध करना नहीं है। ना किसीका खंडन न किसीका मंडन। यह विचार तो मात्र सत्यका अन्वेषण एवं लोगों तक सत्य पहुंचानेके लिए लिखा गया है।

वेदोंमें समानताका उपदेश –

वेदोंका सायंत अध्ययन करेंगे तो पता चलेगा कि, 'वेद सबके लिए उपलब्ध है।' सभी वर्णो, क्या स्त्री क्या पुरुष। सभी लोग परमेश्वरके संतान है। क्या परमेश्वर अपनी संतान स्वरूप मनुष्यमें कोई भेद करेंगे? क्या परमात्मा किसीको सृष्टिके उपकारक वैदिक ज्ञानसे वंचित रखेंगे? अथर्ववेदमें स्त्रीको वेदपढनेकी अनुमति देते हुए लिखा है कि, **'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।'**[1] कन्याको भी ब्रह्मचर्य और विद्याका ग्रहण अवश्य करना चाहिए। परमात्मा स्वयं यजुर्वेदमें कहते हैं कि, **''मैं परमेश्वर इस कल्याणकारी चार वेदोंकी वाणीका सब मनुष्य अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र, स्त्री आदि सबके लिए उपदेश करता हूं।" वैसे तुम विद्यावान लोग भी सभीको विद्याका दान किया करो।**[2]

इस मंत्रमें स्पष्ट रूपसे स्त्री शूद्र वैदिक ज्ञानके अधिकारी है और उसे विद्यासे वंचित नहीं रखना चाहिए ऐसा संकेत मिलता है।

वेदोंके वर्ण्य विषयपर दृष्टि करेंगे तो पता चलेगा कि, वेद ज्ञान सभी के लिए है।

[1] अथर्ववेद ११/५/१८

[2] यजुर्वेद २६/२

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

वेदोंमें ऐसा क्या हैं? जो स्त्री और शूद्रो इसका अध्ययन न करें। वेदोंके अनेक सूक्तोकी मंत्रद्दष्टा स्त्री है।[3] **सं गच्छध्वं संवदध्वं** इत्यादि मंत्रसे मनुष्यमात्रको एकत्रित होकर परस्पर एकदूसरेके कल्याणके लिए कार्य करनेकी आज्ञा दे रहे है। वेद विभाजनकारी नहीं है वैदिक ज्ञान तो जोडनेवाला है।

वेदोंके वर्ण्य विषयोंपर दृष्टि करेंगे तो पता चलेगा कि वैदिक ज्ञान सभीके लिए है। इसमें ऐसे विविध विषयोंका वर्णन है जो सभी लोगोंके लिए उपयोगी और उपयुक्त है। जैसे की अहिंसा, अहिंसा सभी मनुष्यमे होनी चाहिए, अहिंसाका व्रत सभी लोगोंके लिए उपकारी है। वह किसी पुरुष स्त्री या जाति समुदाय विशेषके लिए ही नहीं है। आगे ऐसे विषयोंके बारेमें चिंतन प्रस्तुत किया गया है।

वेदोंमें सदाचार

वेदोंमें सदाचारका विस्तृत वर्णन मिलता है। जो मानव मात्रके लिए कल्याणकारी व उपयोगी है। सचादार तो सभीके लिए होते है। सदाचार पर किसी एक व्यकि व समुदायका **कापीराइट** नहीं है। ठीक वैसे ही मानवोंके लिए परम उपयोगी वैदिक ज्ञानपर और वैदिक साहित्य पर किसीका भी **कोपीराइट** नहीं है।

वेदोंमें गृहस्थधर्म

वेदोंमें युवाओंके लिए उत्तम संदेश दिए है। ऐसे उत्तम विचारवाले बने कि विवाह पश्चात् तलाककी नौबत ही ना आए। विवाहांतर माता – पिता आदि परिजनों व एक दूसरे की प्रसन्नताके लिए जीवन व्यतीत करें।[4] कन्याके माता-पिताको कन्याको दहजमें ज्ञान देनेकी आज्ञा दी है।[5] वेदमें अनेक स्थानोंमें स्त्रीसे, पतिको ज्ञानका उपदेश देनेकी बातकी गई है।[6] स्त्री सब प्रकारके कर्मोका ज्ञान रखती है।[7] तुम हमारे घरकी प्रत्येक दिशामें ब्रह्मज्ञानका प्रयोग कर।

---

[3] ऋग्वेदके अनेक सूक्तोंकी मन्त्रद्दष्टा स्त्री है जैसे कि, मं. १०, सूक्त १० में यमी वैवस्वती, १०/८५ में सूर्या सावित्री,१०/८६ और १०/१४५ में इन्द्राणी, १०/१५१ में श्रद्धा – कामायनी, १०/१५४ में यमी, इत्यादि सूक्त

[4] अथर्ववेद – ७/३७/१,२/३०/१,१४/१/२२ इत्यादि

[5] अथर्ववेद – १४/१/६

[6] त्वं विदथमा वदासि । अथर्व १४/१/२०

[7] जुहूं देवीं सुकृतं विघ्ननापसम् । अथर्व ७/४७/१

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

इन मंत्रोंसे स्पष्ट होता है कि, स्त्री ज्ञानी होनी चाहिए और इसमें ब्रह्मज्ञानका भी उल्लेख मिलता है। इसका अर्थ होता है वैदिक ज्ञानके द्वार शत-प्रतिशत स्त्रीके लिए भी द्वार खुले हैं। ऐसा वेदोंके मंत्रोंसे जाननेको मिलता है।

पशुपालन और गो पालन –

पशुपालन और गोपालन भारतीय संस्कृति और आजिविकाके मुख्य अंग है। यह एक ऐसा कर्म है जिसमें स्त्रियोंकी विशेष भूमिका होती है। वेदोंमें अनेक स्थानोंपर पशुपालनका उल्लेख मिलता है। गृहस्थी द्वारा परमेश्वरसे गौ, बेल, अश्वकी याचना की है। अथर्ववेदमें तो नारीको उद्देश्य बनाकर उसे पशुपालन द्वारा घरकी रक्षा करते रहने की आज्ञा दी है। तदुपरांत वेदोंमें पंचगव्यकी विशेषता गोपालन किस प्रकार करें और गौरक्षा व पशु रक्षा किस प्रकार करें इसका विस्तृत वर्णन मिलता है।

क्या स्त्री और शूद्र, गो पालन या पशुपालन नहीं करते? क्या स्त्री और शूद्र को सत्यादि धर्मसे अवगत नही करना चाहिए? क्या स्त्री और शूद्रोंको अहिंसा सत्य आदि सच्चे धर्मसे जोडना नही चाहिए ?

आहारशुद्धि –

ऐसा नहीं है कि, वैदिक कालमें आहारशुद्धि थी। वेदोंके अनेक मंत्रोंमें मांसाहार करना निषेध बताया गया है। इसका मतलब यह है कि, तत्कालीन लोग मांसका प्रयोग करते थे । इसलिए भगवानने उन लोगोंके ज्ञानकी वृद्धिके लिए वेदोंमें मांसाहार विषयक एवं आहार शुद्धि विशेष मंत्रोका ज्ञान प्रस्तुत किया है । आहारशुद्धि तो प्रत्येक लोगोंके लिए अनिवार्य है। यदि आहारमें शुद्धि नहीं होगी तो लोगोंका स्वास्थ्य बिगड सकता है। इसलिए परमात्माने वैदिक साहित्यमें मांस भक्षणका सर्वथा निषिद्ध किया है। और सभी पशु प्राणियोंको सभी जीवोको मित्रकी दृष्टिसे देखनेका आदेश दिया है।[8]

इसके उपरांत वेदोंमें जलविद्या, कृषिविद्या, चिकित्साशास्त्र, जंतु शास्त्र, वस्त्रविद्या, भवन निर्माण आदि विद्याओंका भी विस्तृत वर्णन मिलता है। यह सभी लोगोंके लिए सभी वर्गोके लिए उपकारी एवं उपयोगी है। ऐसे में सवाल उठता है कि, क्या अहिंसादि धर्मोका पालन

---

७ ब्रह्मापरं युज्यतां ब्रह्म पूर्व ब्रह्मान्ततो मध्यतो ब्रह्म सर्वत: । अथर्ववेद १४/१/६४

[8] यजुर्वेद: ३६/१८

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

करना, उन विद्याओंका अध्ययन करना मानव समुदाय या किसी स्त्री या पुरुषके लिए ही है या सभी के लिए है?

क्या पशुपालन और पशुरक्षा दूध आदि गोरसकी आवश्यकता किसी एक वर्गको पडती है? या स्त्री शुद्र सभी लोगोंको पडती है?

जब मण्डनमिश्र व भगवान आदि शंकराचार्यके बीचमें शास्त्रार्थ हुआ था, तो उसमें न्यायकर्ताके रूपमें मण्डनमिश्रकी पत्नी उभयभारती देवी थी। क्या भगवान शंकराचार्य और मण्डनमिश्र कोई सामान्य विषयपर चर्चा कर रहे थे? या वेदांतपर संवाद कर रहे थे? इससे यह सिद्ध होता है कि शांकरकालमें स्त्रियां वैदिक साहित्यकी अध्येता व न्यायकर्ता थी।

इस प्रकार वेदोंके वर्ण्य विषयोंकी उपादेयता और सभीको श्रेष्ठ बनानेका ईश्वरके संकल्पी पूर्ति हेतु सभी मनुष्योंके लिए वैदिक ज्ञान सुलभ कराना अत्यंत आवश्यक है। एवं विश्वमें संस्कृत भाषाके प्रचारके साथ वैदिक समाज उपयोगी साहित्यका प्रचार भी करना होगा तभी प्रभु श्रीरामका वसुधैव कुटुंबकम मंत्र सिद्ध होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सुचि

१. ऋग्वेद, प्रथम खण्ड, सम्पादक – पं. श्री राममशर्मा आचार्य, प्रकाशक – श्रीसंस्कृति संस्थान बरेली (उ.प्र.)१९६५.
२. ऋग्वेद, चतुर्थ खण्ड, सम्पादक - पं. श्री राममशर्मा आचार्य, प्रकाशक – श्रीसंस्कृति संस्थान बरेली (उ.प्र.)१९६५.
३. अथर्ववेद, १,७ काण्ड, व्याख्या – क्षेमकरणदास त्रिवेदी, आर्य प्रकाशन २०१६
४. अथर्ववेद, १,७ काण्ड, व्याख्या – क्षेमकरणदास त्रिवेदी, आर्य प्रकाशन २०१६
५. यजुर्वेद, व्याख्या – महर्षि दयानंद सरस्वती, आर्य प्रकाशन – दिल्ली, २०१७ संस्करण